Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)
VOL- VIII ISSUE- VI JUNE 2021 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 7.149 ISSN 2349-638x

राणेन्द्र की कहानियों में आदिवासी नारी के संघर्ष की विविध दिशाएं

ललिता स्वामी
11/359 मुक्ता प्रसाद नगर
बीकानेर

आदिवासी नारी हूँ मैं,
संघर्ष से ना हारी हूँ मैं,
संघर्ष ही है मेरा जीवन
रोता रहा है मेरा बचपन

प्रस्तावना :

वर्तमान कथा साहित्य में आदिवासी विमर्श प्रमुख विषय बना हुआ है। आदिवासी विमर्श में आदिवासी महिला को केन्द्र बनाकर रचित कहानियों को भी स्थान मिला है। स्त्री और पुरुष रचित दोनों ही एक–दूसरे के पूरक होते है ये एक ही गाड़ी के दो पहियों की भांति साथ–साथ मिलकर जिन्दगी को आगे बढ़ाते है।

आदिवासी याने आदि से वास करने वाला। इस भारत वर्ष में प्राचीन काल से इस देश में रहने वाला समाज अर्थात् आदिवासी समाज। यही आदिवासी इस देश के सच्चे सुपुत्र है लेकिन आज तक इस समाज को कोई न्याय नहीं मिला। आदिवासी लोग प्रकृति पूजन और प्रकृति की गोद में रहते है। जंगल ही उनके जीवन का आधार और साधन है। लेकिन अंग्रेजों के जमाने से आज तक आदिवासियों पर अन्याय और अत्याचार होते रहे है। स्वाधीनता के पश्चात् भी उस समाज में कोई प्रगति नहीं हुई आदिवासी अपने अधिकारों से वंचित, अज्ञान, अशिक्षा, दरिद्रता, गरीबी, बेकारी आदि समसयाओं से ग्रस्त है और दयनीय जीवन–जीने के लिए अभिशप्त है। ऐसे समाज में नारी की क्या स्थिति या व्यथा होगी इसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। राणेन्द्र रचित कहानियों में आदिवासी समाज की नारी की व्यथा और दशा के साथ–साथ नारी संघर्ष का सजीव चित्रण हुआ है। शोध पत्र में रणेन्द्र रचित निम्नलिखित कहानियों में नारी संघर्ष के अनेक रूप दिखाई देते है –

1. रात बाकी
2. वह बस धूल थी
3. चम्पा, गाछ, अजगर और तालियां
4. बारिश में भीगती गौरेया
5. जल रहे हैं हरसिंगार

अतः यहां पर कथाकार राणेन्द्र रचित कहानियों में व्यक्त आदिवासी नारी को लेकर लेखक के विचारों के साथ अपने चिन्तन को प्रस्तुत कर रहे है।

राणेन्द्र रचित कहानी **रात बाकी** में आदिवासी नारी की प्रताड़ना और उसके शाप से आज तक बांध का पूरा नहीं होना और चाला पच्चो पुष्पा की आजी माँ (दादी माँ) को झोपड़ी में जलाकर मार देने का करूण चित्रण कहानी में हुआ है।

उक्त कथन द्वारा कहानी में औरतों को घर से बाहर निकलने पर पाबन्दी का पता चलता है। ''हाट बाजार में केवल ''नन्हका'' जाति की औरतें ही दिखती थी वृद्धावस्था पेंशन वितरण के दिन को छोड़कर औरत जात कार्यालयों में पैर नहीं रखती थी।

कहानी में स्त्री पात्र रामवतार चेरों की बेटी पुष्पा सिंह है। पुकारू नाम सोमारी है। जो पढ़ी–लिखी खुबसूरत बीस–इक्कीस वर्ष की किशोरी है। पढ़ी–लिखी और सुन्दर होने के कारण ''ऑपरेशन ब्लेक कोबरा'' अभियान के अन्तर्गत बांध बनाने में सहयोग करने वाले सभी

अधिकारियों द्वारा उसे हेय दृष्टि से देखा जाता है और बेइज्जत किया जाता है।

बी.डी.ओ. साहब का अलग ही ख्याल है – ''मुखिया रामावतार तो नहीं टूटेगा पुष्पा पर थर्ड डिग्री अजमाया जाए। लड़की जात है तुरन्त टूटेगी।''

उक्त कथन द्वारा स्पष्ट है कि उच्च अधिकारियों का अपने अनैतिक और नियम विरूद्ध कार्य पूरा करवाने में किस हद तक जा सकते हैं।

कहानी का अंत करूण रस से होता है स्पष्ट है कि विकास के नाम पर आदिवासी नारी शोषण का शिकार होती रही है।

राणेन्द्र रचित एक और कहानी **''वह बस धूल थी''** आदिवासी नारी के शिक्षित और जागरूक होने के परिणाम को बयान करती है। कथा नायिका सोमा कुजूर का पूरा जीवन संघर्ष की गाथा है। वह 23 मार्च 1999 में महिला हॉकी टीम, एशिया कप जीतकर लाती है यह टीम की सबसे तेज फारवर्ड खिलाड़ी सोमा मुजूर के गोल से ही संभव हो पाता है।

कॉलेज ने समय से ही खेल प्रतिभा सोमा कुजूर को शिल्पा शेट्टी और जोनिफर लापेज का नाम देकर उसका मजाक बनाया जाता है।

विवाह पश्चात् विधवा होने पर उसे नौकरी और अपने हक के लिए संघर्ष करना पड़ता है। सोमा को अपने विवाहित होने का प्रमाण देना था चूंकि विवाह ही वैद्य नहीं तो सोमा ....। मृतक की उत्तराधिकारी कैसे? आदिवासी विवाह प्रथाओं को अभी तक कानूनी मान्यताएं प्राप्त नहीं सप्तपदी का कोई प्रमाण नहीं। अतः मुआवजा और नौकरी वैद्य उत्तराधिकारी भाई ओम नाथ को।

सोमा अपनी दो माह की दूध पीती बच्ची को लेकर कलेक्टर सभागार में बैठी रही और सोमा खुद को भूलने लगी। धरती मां की बेटी बिन्दी पाताल लौटने की तैयारी में थी। विदाई का समय आ गया। सोमा कुजूर .... एक आदिवासी स्त्री .... एक सम्पदा .... एक आदिवासी संस्कृति .... खत्म हो गई जैसे रेड इंडियन्स .... जैसे डोडो पंथी जैसे एक नदी।

बस वह धूल थी कहानी आदिवासी नारी के जीवन का दस्तावेज बयान करती है तो प्रतिभावान होकर भी अंत तक संघर्ष करती हुई मृत्यु को प्राप्त हो जाती है।

राणेन्द्र रचित एक और महत्वपूर्ण कहानी है ''चम्पा, गाछ, अजगर और तालियां''। इस कहानी में नारी के जीवन की विविशता का सजीव चित्रण कहानीकार ने किया है। कहानी की प्रधान पात्र नायिका एतवारी खड़िया उर्फ सरस्वती बागे है। हिरणी जैसे बड़ी–बड़ी आंखे, पैरों में उड़ान। उम्र के बढने के साथ–साथ सरस्वती वैद्य, विद्या व पढ़ाई में पारगंत होती गई।

''ऐसा कोई भी नहीं मिला जिसकी टूटी हुई हड्डी को सरस्वती ने सीधा ना किया हो और हड़ जोरी की पत्तियां ना बांधी हो और वह ठीक नहीं हुआ। जादू था लड़की के हाथों में। दादा (आजा) सरस्वती को चंवर फूल के घड़े से निकली हुई चम्पा गाछा कहते थे। इस प्रकार राणेन्द्र रचित कहानी में शराबखोरी की प्रवृति के कारण आदिवासी स्त्री को बेइज्जत होना पड़ता है का सजीव चित्रण किया है। पुरुष समाज मात्र नारी को उपभोग कीवस्तु समझता है। उसी थाने में लाठी सिंह उर्फ आर. के. प्रभारी नियुक्त है जो कि हर प्रकार से अपना काम निकालना जानता है। थाना प्रभारी लाठी सिंह सरस्वती को देखकर उस पर बुरी नजर रखता है और उसके भाई को नक्सली बताकर उसकी षड्यंत्र पूर्वक हत्या कर देता और सरस्वती को पाना चाहता है।

सरस्वती रवीन्द्र के दोस्त रामचन्द्र के पास मिलने जाते समय लाठी सिंह उसके द्वारा बिछाए जाल में फंस जाती है उसके घर पहुंचने से पहले ही पुलिस की जीप में उठाकर थाने लाई जाती है।

''आज पकड़ में आई थी नागिन। डायरी–वायरी हाजत वाजद बाद में पहले पीछे के खाली क्वार्टर में ले चली। पहले सरस्वती के मुंह में कपड़ा ढूंसा गया फिर बिना गलती के दोहत्थे लाठी से पिटाई की गई।'' सरस्वती को लगा उसे अजगर निगल रहा है। अनगिनत मुंह वाला

अजगर उतना ही लिपलिपा उतना ही घिनौना, दुर्गन्ध भरा।''

आजा जो कि पोती सरस्वती और पोते रवीन्द्र को न्याय दिलाने के लिए राजधानी तक गए लेकिन वहां पर भी निराशा ही हाथ लगी। इस प्रकार चम्पा गाछ को सरस्वती को अजगर निकलते गए और तालियां बजती रही। कहानी में आदिवासी स्त्री के विविध पक्षों का मार्मिक अंकन हुआ है। प्रस्तुत कहानी आदिवासी स्त्री का मान–सम्मान उसकी अस्मिता के टूटने की गाथा है। नारी सदैव पुरुष वर्चस्व के अधीन ही रहती हैं उसको पिता, पति, पुत्र के द्वारा समय–समय पर पाबन्दी लागू करके उसके अस्तित्व व मान–सम्मान को आहत किया जाता आ रहा है। इन्हीं प्रतिबन्धों के घेरे में जकड़ी नारी पात्र साधना की कहानी है।

बारिश में भीगती गौरैया कहानीकार **राणन्द्र** ने इसमें नारी मन की परतों को खोलकर पाठकों के सामने रखा है।

''........... नहीं'' एकदम नहीं .... हाई स्कूल कैसे ज्वाइन कर सकती है?

तेरह साल के बेटे की टी–शर्ट से चिपका जॉन ट्रॉवेल्टा उचका समझाने लगा

''.....माँ तूझे नहीं मालूम बाहर आती–जाती औरतों को क्या–क्या बोलते है ..... गन्दी–गन्दी बात ...... बहुत गन्दे लोग हैं ..... बहुत गन्दी जगह है .... बहुत छोटी .... तुम्हारा रोज बाहर निकलना अच्छा नहीं ....''

ना .... नहीं की बारिश के युगों–युगों से भीगती आ रही भीगना ही नियती। भीगती ही रहेगी, कब से हो रही थी बारिश ......।

जवान–साधना बेटिया घर से ही बाहर नहीं निकल सकती। पिद्दी गौरेया अपनी औकात में रहे। स्कूल से नाम कटवाया गया।

बड़ी माँ (बाजिन) की इच्छा के अनुसार साधना की 11 वर्ष बड़े व्यक्ति से विवाह कर दिया गया। अपने में डूबे चुजा किस्म के लोगों से पहली मुलाकात में ही केवल ना .... ही सुनने को मिला।

''देवानन्द की फिल्म लगी है........... बाकी . ... देखनी है।''

– नहीं

– राजकपूर की आवारा तो देखनी ही है .. ..''

– नहीं

– साधना कट बाल कटवाने है

– नहीं

– गरमी की छुट्टियों में जाना है

– नहीं

कहानी में नारी मन की विवशताओं का बेबाक चित्रण है जो चाहकर भी कुछ नहीं कर पाती समाज का भय उसे अच्छे कार्य करने में बाधा बनकर डराता है एवं स्त्री की असमर्थता पुरुष वर्चस्व की अधिकता, विवशता, लाचारी का बेबाक चित्रण नारी पात्र साधना के माध्यम से कहानी में हुआ। जो जन्म में जीवनपर्यन्त तक समाज द्वारा प्रचलित बंधन में जकड़ी, बड़े पिता, भाई, पति और पुत्र द्वारा संचालित एक चाबी के खिलौने के अतिरिक्त कुछ नहीं है। उसका स्वयं का जीवन मात्र दूसरों के लिए ही है। ना.... नहीं शब्द उसके जीवन का ..... हिस्सा है।

कहानीकार **राणेन्द्र** रचित एक और महत्त्वपूर्ण कहानी है **जल रहे है हरसिंगार** जिसमें लेखक ने स्त्री विषयक चर्चित मुद्दों में से एक और समस्या सभी के मन को कचौटती रहती है वह है उसके होने के अहसास की .... उसकी अस्तित्व और पहचान के सवाल को कहानीकार ने कहानी में बखूबी पाठकों के समझ रखा है। रंजीतबाबू जो कि पेशे से दरोगा है पैसा, इज्जत, रौब सब कुछ है। रंजीत बाबू की पत्नी है उर्मी जो कि पोस्ट ग्रेजूएट है खुले स्वभाव की उर्मी रंजित के स्टाफ की आंखों की किरकिरी बनी रहती है।

इस प्रकार उर्मी प्रेमविवाह के बाद भी खुश नहीं रह पाती – '' लेकिन शादी के कुछ सालों बाद वह रंजीत की तरह ही रही।

''महक रहे है हरसिंगार जैसे पहला .... पहला प्यार पूरा घर हरसिंगार के छतनार डाल के

रूप में तब्दील हो गया था और हरसिंगार के फूलों में नजर लग गई।

जीवन से उर्मी को विरक्ति होने लगी उसका जीवन निरस हो गया। संवेदनाएं मर गई। कोई व्यक्ति इतना आत्मकेन्द्रित कैसे हो सकता है? उर्मि को उस दिन आघात लगता है जब रंजीत अपनी पुत्री प्रथा की बीमारी के समय भी उसके पास नहीं होता। उर्मि को ही उसे चिकित्सक के पास लेकर जाना होता है।

रंजीत की कर्तव्यहीनता ने उर्मि को अंदर तक तोड़कर रख दिया था।

इस प्रकार मनपंसद वर से शादी के बाद भी उर्मि सुखी नहीं रह पाती उसे अपना जीवन निराशा से भरा अन्धकारमय लगने लगता है। रंजीत द्वारा उर्मि घर, परिवार और अपने कर्तव्यों में मुंह मोड़ लेना उर्मि का जीवन बर्बाद कर देता है। लेखन ने कहानी के माध्यम से नारी मन में असन्तोष, निराशा और वितृष्णा को रेखांकित किया है। जिनके जीवन में सबकुछ होते हुए भी एकांकी और नीरस है। आदिवासी नारी बचपन में ही समाज द्वारा बनाएकर सांचे में ढाल जी जाती है उस पर अनेक निषेध थोप दिए जाते है। स्त्री को दैहिक आधार पर परखना, उसका शोषण करना समाज की नियति का चित्रण कहानियों में दिखाई देता है।

आदिवासी औरत के साथ पुरुष के द्वारा किए गए छल का पर्दाफाश कहानियों में पूरे आत्मविश्वास के साथ हुआ है, आदिवासी स्त्री को पुरुष हमेशा ……… की नजर से देखता है। ''बह बस धूल थी।'' कहानी में नारी पात्र सोमा को संघर्ष में ही जीते और अंत में मृत्यु को प्राप्त होना बताया गया है। विकास और योजनाओं के माध्यम से आदिवासियों को छला जाता है। नक्सलवाद के कार्यपर उनकी हत्या कर दी जाती है। कहानी में स्पष्ट है कि मुखधारा की मानसिकता साफ नहीं है आजादी के बाद की आदिवासियों को जिल्लत और पशुता के सिवाय कुछ नहीं मिला है कभी उसकी जमीन छीनी जा रही है तो कभी उसकी संस्कृति कहानियों के माध्यम से राजेन्द्र जी ने आदिवासियों की स्थिति, नारी का संघर्ष और अस्मिता की रक्षा हेतु विद्रोह का बेबाक चित्रण किया है। नारी स्वयं के लिए जीना और कुछ कर गुजरना चाहती है। पुरुष बंधन से मुक्त होकर साधना स्वयं के अनुसार कार्य करने की ललक रखती है। इस प्रकार कहानीकार राजेन्द्र को आदिवासी स्त्री के विविध पक्षों को कहानियों के माध्यम से पाठक वर्ग के समक्ष रखा है।

निष्कर्ष :

शोधपत्र में आदिवासी नारी के संघर्ष और उसकी स्थिति को कहानीकार राणेन्द्र के कहानियों के माध्यम में स्पष्ट किया गया है। कहानी में आए नारी पात्रों में जीवन का मार्जिलाइजेशन प्रभावहीनता की प्रक्रिया का मेटाफर (रूपक) दिखाई देता है। राणेन्द्र की कहानियों में आदिवासी समाज और आदिवासी स्त्री (कन्सर्व) सोच के रूप में मौजूद है। **रात बाकी, वह बस धूल थी, चम्पागाछ, अजगर और तालियां, बारिश में भीगती गौरेया और जल रहे हरसिंगार** आदि कहानियां यथार्थ की आंच पर सीझती जीवन की कहानियां है। लेखक ने कहानियों में नारी पात्रों की जिस विकलता, विवशता, बेबसी और त्रासदी को उकेरा है वह व्यवस्थाजन्य है।

राणेन्द्र नारी की विविध दिशाओं के चित्रण कर उसे सम्मान से जीने की सम्भावनाओं का चित्रण किया हैं साथ ही कहानियों में आदिवासियों की भाषा, मिटटी, तीज–त्यौहार, रस, गंध, जीवन संस्कार, संघर्ष का कलेवर प्रस्तुत करती जान पड़ती है।

इस प्रकार हम कह सकते है कि नई पीढ़ी ने कहानीकार राणेन्द्र जी आदिवासी क्षेत्र में जन्मे और पले–बढ़े है उन्होंने एक आदिवासी जीवन को निकटता से देखा और समझा है यही कारण है कि उनकी कहानियां संवेदनाओं और अनुभूतियों की सजीव अभिव्यक्ति है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. आधार ग्रंथ – रात बाकी और अन्य कहानियां – राणेन्द्र
2. आदिवासी साहित्य – विविध साहित्य स. रमेश संभा जी कुरे, डॉ. मालती घोड़ोपन्त शिन्दे, प्राचार्य – प्रवीण अनन्त राव शिंदे
3. हिन्दी साहित्य में आदिवासी विमर्श – डॉ. पण्डित बन्ने
4. आदिवासी स्वर और नयी शताब्दी – सं. रमणिका गुप्ता
5. लोकप्रिय आदिवासी कहानियां – सं. वंदना टेटे
6. आदिवासी अस्मिता वाया कथा साहित्य – रसाल सिंह बन्नाराम मीणा
7. वर्तमान समय में आदिवासी समाज सं. गीता वर्मा, रविकुमार गौड़